JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

धर्मवीर भारती की काव्य–भाषा और विशेषण चमत्कार : विश्लेषणत्मक अध्ययन

डॉ.सियाराम मीणा
सह आचार्य हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय,कोटा राज.
9413129093 / 9828678909
drsrmeena2373@gmail.com

सारांश

वस्तु और शिल्प के स्तर पर नयी कविता प्रयोगशील काव्यधारा थी। भाषा का प्रचलित रूप रूढ़िग्रस्तता के कारण नये कवियों के मानस में उथल–पुथल मचा रहा था। अतः नये कवियों का भाषा और शिल्प के प्रति विद्रोही मुद्रा अपनाना आवश्यक था। वास्तव में नया कवि जिसे अनुभव करता है उसे उसके सम्पूर्ण रूप में सम्प्रेषित करना चाहता है। वह अपने भाव, अनुभूति और संवेदना में कहीं भी काट–छाँट नही करता, इससे भी उसे भाषा और शिल्प के प्रति सचेत दृष्टि रखनी पड़ी।

धर्मवीर भारती काव्यानुभव एवं अभिव्यक्ति के स्तर पर नयी कविता के साधक सर्जक कलाकार थे। भारती का अनुभव संसार जितना विस्तृत एवं व्यापक है, उतना ही खुलापन और सहजता उनकी काव्य–भाषा में है। भारती की काव्यभाषा और उसमें प्रयुक्त शब्द अत्यन्त अर्थवान होने के काण अनुभूति के सम्पूर्ण क्रिया–व्यापार को जीवन्त रूप से प्रस्तुत करते हैं। धर्मवीर भारती की काव्यभाषा की सबसे बड़ी शक्ति है – उसके विशेषण शब्द। इन विशेषणों का प्रयोग कवि ने बहुत ही स्वाभाविक और अनुभूति के अनुकूल कलात्मक ढ़ंग से किया है। जो काव्यभाषा में अद्भुत आकर्षण उत्पन्न करते है तथा उसकी सम्प्रेषण शक्ति का विकास करते हैं। भारती की कविता में औचित्यपूर्ण ढंग से नियोजित विशेषण शब्दों ने काव्य भाषा की संवेदनात्मक क्षमता में चार चाँद लगा दिये हैं। वास्तव में विशेषण भारती की काव्य भाषा के आकर्षण का प्रमुख कारण है। प्रस्तुत शोध–पत्र में धर्मवीर भारती की काव्य–भाषा में प्रयुक्त विशेषणों का मौलिक ढ़ंग से विश्लेषण किया जावेगा।

कुंजी शब्द : नयी कविता, धर्मवीर भारती, काव्य–भाषा, विशेषण, **विशेषण चमत्कार** शिल्प, प्रयोगशीलता, बिम्बधर्मिता, सम्प्रेषण, परंपरागत विशेषण, नवीन विशेषण, अर्थव्यंजक विशेषण, औचित्यपूर्ण, चित्रात्मकता, दृश्यात्मकता।

प्रस्तावना :

भाषा अभिव्यक्ति और सम्प्रेषण का सर्वाधिक सशक्त और सार्थक माध्यम है। भाषा में काव्य–भाषा का विशिष्ट स्वरूप और महत्व होता है। वस्तुतः भाषा अभिव्यक्ति के साधनों का यह धरातल है जिस पर शिल्प के सभी उपकरण आधार एवं स्वरूप प्राप्त करके खड़े होते है, इसलिए काव्य–शिल्प में भाषा का महत्वपूर्ण स्थान है। 'कविता में ऐसे शब्दों का प्रयोग होता है, जो अपने मूल अर्थ को सुरक्षित रखते हुए, छांदस विधान के अन्तर्गत क्रियाशील कवि–प्रतिभा के जादू से, एक अतिरिक्त अर्थ से गर्भित हो जाते है।'' अर्थात् सृजन प्रक्रिया में पड़कर अनुभूति से आविष्ट कल्पना के संघात से भाषा अनिवार्यतः लयात्मक एवं बिम्बमय बन जाती है और इस प्रकार काव्य भाषा का स्वरूप सामान्य भाषा से भिन्न हो जाता है।''[1] कवि प्रतिभा काव्यभाषा में विविध उपादानों के माध्यम से ऐसा चमत्कारिक प्रभाव डालती है कि वह सामान्य भाषा से अलग और विशिष्ट हो जाती है अपितु काव्यात्मक चमत्कार भी उत्पन्न करती है। कविता की भाषा शब्दों को जीवन्त, गतिशील और संवेदनशील व्यक्तित्व प्रदान करती हैं। वह उसे विशिष्ट प्रयोग विधि द्वारा बिम्बात्मक और विशेष व्यापार सूचक बना देती है। वास्तव में कविता की भाषा दर्शन और तर्क से दूर भावात्मक, रागात्मक, बिम्बात्मक, सृजनात्मक, लयात्मक तथा लक्षणा और व्यंजना से युक्त होती है लेकिन अतार्किक भी नहीं होती। भाषा को गहन भावपूरित और बिंबात्मक बनाने में विशेषणों का कोई मुकाबला नहीं है। और धर्मवीर भारती की काव्य भाषा का यह प्रधान गुण है। यहाँ एक नहीं दो–दो, तीन–तीन विशेषण कविता की भाव गरिमा को प्रभावशाली बनाते दिखाई देते है।

अध्ययन का उद्देश्य :

विशेषण भाषा का महत्वपूर्ण एवं प्रभावशाली अंग है। काव्य–भाषा में विशेषण का विशेष महत्व होता है। विशेषण कवि की अभिव्यंजना शक्ति और प्रभाव को कई गुणा बड़ा देता है। धर्मवीर भारती के काव्य में विशेषण का प्रयोग एवं प्रभाव समूची नई कविता में अनूठा और अकेला प्रतीत होता है। ठण्डा लोहा, सातगीत वर्ष, कनुप्रिया, अंधायुग, सपना अभी भी' सभी रचनाओं में विशेषणों का सार्थक, व्यंजक, स्वाभाविक एवं प्रभावशाली प्रयोग हुआ है। प्रस्तुत शोध–पत्र का उद्देश्य काव्य–भाषा में विशेषण एवं कवि धर्मवीर भारती के काव्य में विशेषणों का प्रयोग, कौशल एवं प्रभाव आदि का सूक्ष्म एवं मौलिक विश्लेषण करना है।

साहित्य समीक्षा वा साहित्यावलोकन :

वस्तु और शिल्प के स्तर पर प्रयोगशीलता नयी कविता की महत्वपूर्ण विशेषता है। इसलिए उसकी भाषा और शिल्प के विविध उपादानों में आमूलचूल परिवर्तन हुआ। यही कारण है कि आलोचकों का ध्यान नयी कविता के शिल्प पक्ष पर पर्याप्त मात्रा में गया और उस पर कई मानक आलोचनात्मक ग्रंथ उपलब्ध है जो अध्यताओं और शोधार्थियों का मार्गदर्शन करते हैं। यथा– नयी कविता : रचना प्रक्रिया–डॉ.ओम प्रकाश अवस्थी– पुस्तक संस्थान कानपुर,1972, आधुनिक हिन्दी कविता का अभिव्यंजना शिल्प– डॉ.हरदयाल नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली–110002 प्र.सं.1997, डॉ.धर्मवीर

भारती का रचना संसार : डॉ.रामसुख व्यास, धर्मवीर भारती का काव्य–शिल्प– डॉ.अलका रानी वर्मा, निर्मल पब्लिकेशन्स दिल्ली–94 प्र.सं. 1994, आस्था के चरणः डॉ.नगेन्द्र– नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली 1968 तथा अद्यतन आलेखों में भारती के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में प्रभात खबर https://www.prabhatkhabar.com/prabhat-literature/1235264 **Prabhat Khabar Digital Desk Dec 24, 2018,** अंधा युग : एक परिचय(लेख)–प्रो.एस.वी.एस.एस. नारायण राजू http://drnarayanaraju.blogspot.com/2019/01/blog-post_3.html 3 जनवरी 2019, डॉ.राजेश दीक्षित का लेख : वैष्णव दर्शन और भारतीय आशावाद के रूमानी कवि–डॉ.धर्मवीर भारती–'शब्द–ब्रह्म' भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका, 17 जुलाई 2017 आदि प्रमुख है जिनका अध्ययन इस शोध–पत्र के लिए उपयोगी रहा है।

नयी कविता और काव्य–भाषा :

भाषा का प्रचलित रूप रूढ़िग्रस्तता के कारण नये कवियों के मानस में उथल–पुथल मचा रहा था। अतः नये कवियों का भाषा और शिल्प के प्रति विद्रोही मुद्रा अपनाना आवश्यक था। ''एतदर्थ नये कवियों ने नयी भाषा की खोज की। नये शब्द, शब्दों के नये संदर्भ, प्रयोग, नये मुहावरे, भाषा के नये अभिव्यक्ति साधन तथा शब्दों के नये संस्कार, प्रचलित अर्थ से अधिक अर्थ भरने की लालसा ने उन्हें व्याकरण के नियमों को तोड़ने पर विवश किया।''[2] ''मूलतः नयी कविता की प्रयोगशीलता का पहला आयाम भाषा से सम्बन्ध रखता है, दूसरी बात यह कि वह भाषा सम्बन्धी प्रयोगशीलता को वाद की सीमा तक नहीं ले गयी– बल्कि ऐसा करने को अनुचित भी मानती रही है।''[3] नये कवियों ने युगीन संदर्भों और अनुभूति की नवीनता के दबाव को महसूस किया और काव्याभाषा के उपकरणों को प्रयोगशीलता द्वारा नवीनता प्रदान की। वास्तव में नया कवि शब्दों के चयन और प्रयोग के प्रति अधिक सतर्क रहा है। 'नयी कविता में शब्द–चयन की कसौटियाँ बदल गयी हैं। नया कवि शब्दों को प्रसाद, ओज, माधुर्य गुणों या अनुप्रास जैसे अलंकारों को दृष्टि में रखकर नहीं चुनता; बल्कि अर्थ–व्यंजना को दृष्टि में रखकर चुनता है।''[4] भवानी प्रसाद मिश्र ने भी लिखा है कि नये कवि शब्दों के साधारण अर्थ से बड़ा अर्थ उनमें भरना चाहता है।'[5] वास्तव में नया कवि जिसे अनुभव करता है उसे उसके सम्पूर्ण रूप में सम्प्रेषित करना चाहता है। वह अपने भाव, अनुभूति और संवेदना में कहीं भी काट–छाँट नही करता, इससे भी उसे भाषा और शिल्प के प्रति सचेत दृष्टि रखनी पड़ी। यह कवि की सृजनात्मकता और उसकी अन्वेषणात्मक प्रवृति का परिचायक है।

धर्मवीर भारती की काव्य–भाषा :

धर्मवीर भारती काव्यानुभव एवं अभिव्यक्ति के स्तर पर नयी कविता के साधक सर्जक कलाकार थे। भारती का अनुभव संसार जितना विस्तृत एवं व्यापक है, उतना ही खुलापन और सहजता उनकी काव्य–भाषा में है। भारती की काव्यभाषा और उसमें प्रयुक्त शब्द अत्यन्त अर्थवान होने के काण अनुभूति के सम्पूर्ण क्रिया–व्यापार को जीवन्त रूप से प्रस्तुत करते हैं। 'भारती का सहज, सुन्दर, प्रभावशाली, प्रवाहमय और सशक्त शब्द–चयन इनकी काव्यभाषा को प्रांजल बनाता है...नवीन विशेषणों का प्रयोग अभिनवता लिए हुए हैं''[6] वे भाषायी प्रयोगशीलता के संदर्भ में अनुभूति की नवीनता और उसकी आवश्यकता को बखूबी समझते थे। प्रभात खबर में लिखा है कि 'भारती के काव्य में भाषा के प्रयोग में सरलता, सजीवता और आत्मीयता का पुरजोर संकलन है।'[7]। अनुभूति की नवीनता और नये शब्दों की आवश्यकता का अनुभव करते हुए भारती प्रकारांतर से अंधायुग में कहते हैं कि–

'लेकिन आज अन्तिम पराजय के अनुभव ने
जैसे प्रकृति की बदल दी है सत्य की
आज कैसे वही शब्द
वाहक बनेंगे इस नूतन अनुभूति के' [8]

काव्यभाषा के कृत्रिम और अति चमत्कारपूर्ण रूप को भारती ने कभी महत्त्व नहीं दिया, वे भाषा में सहज प्रभावशीलता और भावानुकूलता के गुण को अपेक्षित मानते है। उनकी भाषा में एक अद्भुत निर्मलता और मानवीय मूल्यों की चिंता है। उनके उपमान, अप्रस्तुत और विशेषण इस कसौटी पर खरे उतरते हैं।

धर्मवीर भारती ने सामान्य व्यवहार तथा बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया है किन्तु उसे पहले रचना प्रक्रिया के सर्जनात्मक दौर से गुजरते हुऐ काव्य कला के महत्वपूण्र तत्वों से आवेष्ठित किया है। उनकी भाषा विचार और अनुभूति के संश्लिष्ट रूप को बिम्बात्मक रूप में ढालती है। इसके लिये भारती के पास श्रैष्ठ वाणी, प्रतीक, बिम्ब, विशेषण, उपमा आदि हैं जिनके बल पर सामान्य व्यवहार की भाषा भी गम्भीर अर्थवत्ता एवं काव्यात्मकता लिये हुए हैं। उनकी काव्यभाषा निरंतर विकसनशील रही है।

'ठण्डा लोहा' की काव्यभाषा वनफूलों–सी नयी वाणी और सजल मोती–सी उपमाओं से युक्त है। कवि की रोमानी संवेदना और उसकी में से युग के हृदय में स्पंदित होने वाली वेदना सहज और संश्लिष्ट काव्यभाषा में व्यक्त हुई है। कवि ने एक ऐसी भाषा का प्रयोग किया है जो परम्परा और प्रगति के पथ पर अग्रसर है। जहाँ उसमें एक तरफ छायावादी संस्कारों की गंध है, वहीं साधारण बोलचाल की भाषा का भी प्रयोग हुआ है। ठण्डा लोहा की काव्यभाषा में विशेषणों का प्रयोग बहुत सटीक और भाषा व भाव की गुरूता को बढ़ाने वाले हैं, यह नहीं कहा जा सकता कि यह उनका प्रथम काव्य संग्रह और इसमें चलताऊ किस्म के विशेषणों का प्रयोग किया गया हो। अतः कहा जा सकता है कि विशेषणों का प्रयोग भारती और उनकी भाषा का सहज और प्रकृत गुण है।

'सात गीत वर्ष' की काव्यभाषा 'ठण्डा लोहा' से अधिक सहज और यथार्थ के धरातल पर प्रतिष्ठित है। प्रायः यहाँ काव्यभाषा छायावादी संस्कार स्निग्ध, कोमल, लहरील प्रभाव से मुक्त होरकर व्यंग्यात्मक हो गयी है। यह काव्य संग्रह पूर्ण रूप से नयी कविता की काव्यभाषा के स्वरूप का प्रतिनिधित्व करता है। सहज सामान्य बोलचाल के लहजे से सटीक और काव्यात्म्क व्यंग्य दिखाई देता है। 'सात गीत वर्ष' का काव्यभाषा में विशेषणों का अनूठा प्रयोग हुआ है।

भाव, अनुभूति और वैचारिक संश्लिष्टता से युक्त 'अन्धायुग' भाषिक संरचना की दृष्टि से प्रौढ़ और सशक्त रचना है जिसमें कवि ने भाव, अनुभूति और विचार के अनुकूल भाषा, शब्द, लोकोक्ति, मुहावरे, लय और लय–परिवर्तन, गद्यात्मकता, बिम्बात्मकता, प्रतीकात्मकता, लक्षणा, व्यंजना, छन्द, अलंकारों, विशेषणों का प्रयोग कर काव्यभाषा को सशक्त बनया है। 'अन्धायुग' में बोलचाल की सामान्य भाषा का सहज किन्तु काव्यात्मक प्रयोग हुआ है। 'धर्मवीर भारती का 'अंधायुग' नयी कविता की प्रतिनिधि रचना है । यह रचना नयी–कविता की काव्य संवेदना, शिल्पगत नवीनता और भाषा सौष्टव की स्वायत्तता की परिचायक भी है।'[9]

वास्तव में काव्यभाषा की दृष्टि से 'कनुप्रिया' नयी कविता का महत्वपूर्ण प्रतिमान है। प्रचलित और सामान्य बोलचाल की भाषा का प्रयोग करके भी यह रचना अभिव्यंजना के स्तर पर 'क्लासिकल' रचना है। यह रचना भाषा की कृत्रिमता से दूर औचित्यपूर्ण शब्द विधान से सज्जित और प्रवाहपूर्ण शैली में विरचित है। कवि भाषात्मक प्रयोगों में चमत्कारों से दूर रहा है। अतः कनुप्रिया की भाषा में जहाँ एक ओर मार्दव है, सच्चिक्क्णकता है, तो दूसरी और उसमें सम्प्रेषणीयता और शक्तिमत्ता भरपूर है। शब्दों की ऐसी संगति और विशेषणों के ऐस सार्थक प्रयोग किये गये है कि किसी भी शब्द का स्थानापन्न दूसरा शब्द नहीं बन सकता है।''[10] भारती काव्यभाषा की अर्थवत्ता और सम्प्रेषणीयता के प्रबल समर्थक कवि है। उनकी भाषा सामान्य बोलचाल एवं लोक–व्यवहार की भाषा है जिसमें सभी प्रकार के शब्दों को अपनाकर अनुभूति को सम्प्रेषणीय बनाया है। कनुप्रिया में प्रयुक्त विशेषणों की सार्थकता, उनकी नवीनता, ताजगी, बिम्बात्मकता, स्निग्धता, अर्थ प्रवणता देखते ही बनती है। आगे हम भारती की कविता में प्रयुक्त विशेषणों का उदाहरण सहीत विश्लेषण करेंगे।

धर्मवीर भारती की काव्य–भाषा में विशेषण चमत्कार :

धर्मवीर भारती की काव्यभाषा की सबसे बड़ी शक्ति है – उसके विशेषण शब्द। ये शब्द काव्यभाषा की महत्वपूर्ण आवश्यकता –बिम्बधर्मिता – को सघन बनाते है अर्थात् बिम्ब निर्माण में यह विशेषण शब्दावली महत्वपूर्ण है। इन विशेषणों का प्रयोग कवि ने बहुत ही स्वाभाविक और अनुभूति

के अनुकूल कलात्मक ढ़ंग से किया है। जो काव्यभाषा में अद्भुत आकर्षण उत्पन्न करते है तथा उसकी सम्प्रेषण शक्ति का विकास करते हैं। कवि कविता में जिन विशेषणों का प्रयोग करते हैं वे स्वाभाविक और प्रभावशाली होते हैं। डॉ.अलका रानी वर्मा ने लिखा है कि भारती ने अपनी कविताओं में विशेषणों का अत्यधिक प्रयोग करके आकर्षण–भाव भरने की कोशिश की है। उनकी 'कनुप्रिया' काव्यकृति तो भवुकता की पुतली ही कही जायेगी, जो बिना किसी विशेषण की पंक्ति बिछाए एक शब्द की भी अनुगूँज नहीं करती।...अंधायुग के पात्र भी अंधाधुंध विशेषणों का प्रयोग करते हैं।'[11]

कवि ने नवीन और परम्परागत दानों ही प्रकार के विशेषणों का प्रयोग किया है। इस दृष्टि से 'ठण्डा लोहा' और 'कनुप्रिया' का विशिष्ट स्थान है। इन रचनाओं में कवि ने एक संज्ञा के लिए एक ही नही, दो–दो, तीन–तीन विशेषणों का प्रयोग किया है। कनुप्रिया में तो कवि ने विशेषणें की झड़ी ही लगा दी हैं ये विशेषण कनुप्रिया की संवेदना की मूल आवश्यकता को पूरी करते हैं। 'सात गीत वर्ष', 'अन्धायुग', और 'सपना अभी भी' में भी अभीष्ट के सम्प्रेषण के निमित्त विविध विशेषणों का प्रयोग किया गया है। ऐसा लगता है कि भाषा विशेषणों के बिना आगे बढ़ना ही नहीं चाहती, नवीन विशेषणों के बिना संवेदना संवेद्य होना ही नहीं चाहती। कनुप्रिया की संवेदना के लिए कवि ने एक से बढ़कर एक नवीन और अर्थव्यंजक विशेषणों का प्रयोग किया है। राधा की प्रश्नाकुल भावुकता के लिए किये गये विशेषण विशेष रूप से द्रष्टव्य हैं–

सुनो मेरे प्यार–
यह काल की **अनन्त पगडण्डी** पर
अपनी **अनथक यात्रा** तय करते हुए सूरज और चन्दा,
बहते हुए अन्धड़
गरजते हुए महासागर
झकोरों में नाचती हुई पत्तियाँ
धूप में खिले हुए फूल और
चाँदनी में सरकती हुई नदियाँ
इनका अन्तिम अर्थ आखिर है क्या?[12]

यहाँ पगडण्डी को अनन्त, यात्रा को अनथक, अन्धड़ को बहते हुए, महासागर को गरजे हुए, पत्तियों को नाचती हुई, फूल को धूप में खिलते हुए, नदियों को सरकती हुई तथा अर्थ के लिए अन्तिम विशेषण का प्रयोग कर कवि ने एक तरफ वस्तु स्थिति को गहराई के साथ व्यंजित किया है, वहीं काव्य–भाषा को भाव संवेद्य बनाकर सृजनात्मक पक्ष को उजागर किया है। इस प्रकार के विशेषणों द्वार कवि ने बिम्ब निर्माण की प्रक्रिया कों सुगम बना दिया है और निर्मित बिम्ब अर्थ और संवेदना की अनेक परतों को एक साथ खोलता हुआ सम्पन्न होता है। हिन्दी साहित्य में इस प्रकार के विशेषण दुर्लभ प्रतीत होते है। निम्न उदाहरण है जिनमें विशेषण और क्रिया विशेषण का बहुत ही सुन्दर प्रयोग हुआ है –

1. तुम्हारा साँवला लहराता हुआ जिस्म
तुम्हारी किंचित् मुड़ी हुई शंख–ग्रीवा
तुम्हारी उठी हुई चन्दन बाँहें
तुम्हारी अपने में डूबी हुई
अधखुली दृष्टि
धीरे–धीरे हिलते हुए
तुम्हारे जादू भरे होंठ।[13]

2.बुझी हुई राख, टूटे हुए गीत, डूबे हुए चाँद,
रीते हुए पात्र, बीते हुए क्षण–सा–
मेरा यह जिस्म।
x x x
टूटे हुए खण्डहरों के उजाड़ अन्तःपुर में
छूटा हुआ एक साबित मणिजटित दर्पण–सा
आधीरात दंशभरा बाहुहीन
प्यासा सर्पीला कसाव एक
जिसे जकड़ लेता है
अपनी गुंजलक में।[14]

प्रथम उदाहरण में प्रेम और यौवन में मदमाती नायिका का दृश्य बिम्ब प्रस्तुत करने के लिए एक से बढ़कर एक सार्थक विशेषण प्रयुक्त किये है– जिस्म के लिए सांवला लहराता हुआ, ग्रीवा के लिए किंचित मुड़ी हुई शंक–ग्रीवा, बॉहों के लिए उठी हुई चंदन बॉहें, दृष्टि के लिए अपने में डूबी हुई अधखुली दृष्टि, होठों के लिए धीरे–धीरे हिलते हुए जादू भरे होंठ। दूसरे उदाहरण में विप्रलब्धा राधा के निराश और शिथिल शरीर की सघन बिम्बात्मक अभिव्यक्ति के लिए कवि ने व्यंजक और सार्थक विशेषणों प्रयोग किया है। विप्रलब्धा नायिका राधा का शरीर कृष्णा के वियोग में बुझी हुई राख, टूटे हुए गीत, डूबे हुए चाँद, रीते हुए पात्र, बीते हुए क्षण–सा हो गया है। विशेषणों की झड़ी लगाकर लेखक ने सघन दृश्यात्मक बिंबों की सुन्दर सृष्टि की है। तीसरे उदाहरण में प्रभावशाली सार्थक और व्यंजक विशेषणों को देखा जा सकता है।

'ठण्डा लोहा' में कवि ने अपनी रोमानी संवेदना और युग–जीवन की पीड़ा, संत्रास, घुटन आदि का चित्रण करने के लिए एक से बढ़कर सुन्दर विशेषण–शब्दों का प्रयोग करके भाषा के अभिव्यंजना सौदंर्य को बढ़ाया है, यथा –

तुम्हारे **रंग रतनारे नैन**,
तुम्हारे **मद मतवारे बैन,**
तुम्हारे ये **जहरीले बाल,**
गाल पर **लहराते बेचैन!**
नैन में **मंजुल शिशिर प्रभात**
वक्ष–स्पंदन में झंझावात
खुये ये **काले–काले केस**
सघन घन अलकों में बरसात
सुनहली सन्ध्या के चहुँ ओर
नशीली गीली काली रात।[15]

यहाँ नायिका के शारीरिक सौंदर्य की मादकता, आन्तरिक रोमानी हलचल तथा बाह्य वातावरण की उद्दीपकता को कवि ने विशेषणों के माध्यम से ही व्यक्त किया है । रंग रतनारे नैन, मद मतवारे बैन, जहरीले बाल, मंजुल शिशिर प्रभात, वक्ष स्पन्दन, काले – काले केश, सघन घन अलकों, सुनहली संध्या तथा नशीली गीली काली रात कहने से कवि का कथ्य और संवेदना पूर्णता प्राप्त करते हैं । यहाँ यह कहना कोई अतिरेक नहीं

कि कविता का सारा दारोमदार विशेषणों पर ही आधारित है। परम्परागत ही सही, पर औचित्यपूर्ण ढंग से नियोजित विशेषण शब्दों ने काव्य भाषा की संवेदनात्मक क्षमता में चार चाँद लगा दिये हैं। विशषणों की प्रयोगगत ताजगी, बिंबधर्मी चित्रात्मकता और दृश्यात्मकता अनूठी है। कवि ने प्रस्तुत को ही साकार कर दिया है। हिन्दी कविता में ऐसे उदाहरण भारती के काव्य में ही देखे जा सकते हैं। वास्तव में विशेषण भारती की काव्य भाषा के आकर्षण का प्रमुख कारण है । सात गीत वर्ष, अन्धायुग और सपना अभी भी के उदाहरण भी द्रष्टव्य हैं।

1. फूल/का अधखिला अन्तस्
   एक **रंगीन लहराता अतृप्त** सागर है –
   तुम्हारी मुलायम उँगलियों के तटों से
   बेबस–सा टकराकर बार–बार अपने में
   वापस लौट आता है
   कुछ भीगी मणियाँ
   कुछ आँसू–सा खारा फेन
   किसी निर्वसना जलपरी का लज्जाभीत कम्पन
   नियति के टुकड़ो–सा/छूट–छूट जाता है/मुठ्ठी में तुम्हारी।[16]
2. यह लज्जाजनक युद्ध
   अपनी अधर्मयुक्त
   उज्जवल वीरता कहीं और आजमाओं
   हे पराक्रमसिन्धु! [17]
3. भिखमंगे, लँगड़े, लूले, गन्दे बच्चों की
   एक बड़ी भीड़, उस पर ताने कसती
   पीछे–पीछे चली आती है। [18]
4. लटें छितराती समुद्री हवाओं पर
   तैरती है एक गाढी छाप
   पतले धुनष होठों की
   पंचमी की चाँदनी से
   क्षीण, गौर, कटाव वाले बदन को
   घेरती है एक आतुर बाँह। [19]

इन उदाहरणों से स्वतः स्पष्ट हो जाता है कि धर्मवीर भारती किसी संज्ञात्मक भाव को पूर्ण संवेदित करने के लिए कलात्मक रूप से विशेषणों का प्रयोग करते हैं। इन विशेषणों की व्यंजकता, सार्थकता, प्रभावोत्पादकता, औचित्य, अनुकूलता, नवीनता, ताजगी, बिम्बात्मकता, स्निग्धता, अर्थ प्रवणता देखते ही बनती है। कवि की प्रतिभा और कौशल बडा कमाल का है जिसमें वे दो–दो तीन–तीन विशेषण और क्रिया विशेषण का प्रयोग कर भावाभिव्यंजना में कोई कमी नहीं छोड़ते बल्कि उसमें चार चाँद लगा देते हैं। भारती के विशषणों में ताजगी और स्वाभाविक चमत्कार है; जो उनकी भाषागत सहजता का परिचायक है। डॉ.राजेश दीक्षित ने लिखा है कि सहजता भारती के काव्य की सबसे बड़ी विशेषता है। सहजता बातचीत की भाषा की विशेषता है। और जब यह कवि को सिद्ध हो जाती है तब उसकी काव्य भाषा में स–प्रणता आ जाती है। भारती जी की काव्य भाषा गहन संरचनात्मक दृष्टि से भी अत्यंत समृद्ध है। काव्यभाषा की बाह्य संरचना का सरोकार जहां ध्वनि, शब्द, रूप और काव्य जैसे भाषिक स्तरों से होता है,वहां गहन संरचना में अर्थ–विशेष क्रियाशील होता है।'[20]

समूची नयी कविता में भारती के विशेषण और उनकी प्रभावान्विती विलक्षण और अनूठी है। ये उदाहरण मात्र एक बानगी है, भारती का काव्य विशेषणों का खजाना है। भारती के काव्य में सर्वत्र विखरे आकर्षक विशेषणों को इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है –

धुधआती, चम्पई, सुरमई, मदभरी चाँदनी, नाजुक मृदुल तूफान, जवान गुलाब, हहराती, अंधीघाटी, अन्धायुग, पिघले फूलों की आग, घायल फूलों की माला, मासूम बादल, रसमसाती धूप, अर्चना की धूप, पाव घड़ी, अनदेखी कड़ी, गुलाबी दुनियाँ, सूने खण्डहर, थकी पगड़ण्डी, रूँधते गले, पीली–सी चिड़िया, तोतापंखी किरणों, विषैली नागिन, गर्म होठों, मूँगिया बादल, जाफरानी तन, अछूते फूल, कमसिन परियाँ, अल्हड़ तरूनाई, अनचिते चुम्बन, कच्ची साँसे, गंगा–जुमनी वय, रतनारी किरनों, अरसौहीं अँगड़ाई, लहराता तन, चमचम चुनरी, खिलता यौवन, सलज निगाहों, शबनमी नजर, झिलमिलाती छाँह, फीकी–फीकी शाम, कुचली पंखुड़ियों, चमकते अँधियारे, सुहागन गोद, इन्द्रजाली प्सास, गूँगे झकोरे, स्वर्णिम संगीत, अलसायी वेला, अज्ञात वनदेवता, निर्व्याख्या वेदना, उदास काँपती किरणे, अर्द्धोन्मीलित कमल, कटावदार फूल, शिथिल आलिंगन, चटुल मछलियाँ, घुमावदार पगडण्डी, सरकती हुई नदियाँ, गुनगुने स्पर्शो, प्रलयशून्य सन्नाटा, सुनसान किनारा, अनन्त प्रदीप्त सूर्यों, विक्षुब्ध विक्रान्त लहरें, सिन्दुरी गुलाब, निर्जीव सूर्य, जहरीले अजगर, जार्जेट के पीले पल्ले–सी, क्वारेपन के कच्चे छल्ले सी, नीले कोहरे, आवारा पाँव, मंथर चाल, टूटते नक्षत्रों की छाँव, अन्धी जहरीली गुफा, रंगीन गुलाबों की घाटी, तरलायित, बडरी, कटावदार आँखे, फूल बसे घर, धूपधुली छत, छाँह लिपी दीवार, जरतारी ओढ़नी, मूर्च्छित घाटी, शिखर वाला गर्वीला पर्वत, भूखे हाथो की, तने हुए माथों की, नपुंसक अस्तित्व, अंधी संस्कृति, रोगी मर्यादा, झूठा भविष्य, पतली डोरी, सूना गलियारा, मरघट की–सी खामोशी, सूनी–सूनी आँखे, हारा हुआ अनुभव, घिसा हुआ सिक्का, टिमटिमाती रोशनी, बदरंग असाधारण चेतना, ढीली अंजुरी, काँपती धूप, टूटी साइकिल, झूठ दरवाजा, बेरौनक सड़कें, घिघियाती अमानुषिक चीख, काँपता हुआ बेमानी दृश्य, बम्बइया बरसात, मद्धित मौत, विस्फोटक दुखान्त, गीली रेत, भीगी सरपत, गोरी–गोरी सोंधी धरती, कारे–कारे बीज, अपराजित विश्वास, मुरदा सपनों, मतवाले बादल, अजनबी दुनियाँ, काले जहरीले बादल, मृदुल चाँदनी, काली ठण्डी चट्टानों, बेदाग नयी वाणी, गहराती मेघ घटनाओं, दर्दीली आवाज, मुर्दार चेहरे, झूठी अकड़, उदात्त यशगाथा, जादू भरे क्वाँरे आतुर मन, अनियारा सवेरा, चाँद तीखा कटावदार और शराबी सांस आदि कई श्रेष्ठ विशेषण शब्दों का प्रयोग कवि भारती ने किया है; जो काव्य –भाषा की बिम्बधर्मिता और व्यंजना शक्ति के योग देते है; अनुभूति को अंतिम छोर तक ठोक–बजाकर पूर्णता में अभिव्यक्त करते हैं। इन विशेषण शब्दों की विशेषता एक और है, वह यह कि ये लाक्षणिक सौंदर्य से मण्डित होकर मन की गहराइयों में उतरकर हमें एक नये अर्थ की प्रतीति कराते हैं।

निष्कर्ष : कहा जा सकता है कि धर्मवीर भारती नयी कविता के उन प्रतिनिधि कवियों में हैं जिन्होंने नयी कविता को वस्तु और शिल्प के स्तर पर मानक ग्रंथ प्रदान किये। ठण्डा लोहा, सातगीत वर्ष, कनुप्रिया, अंधायुग और सपना अभी भी जैसी रचनाओं का रचना विधान, भाषा–शिल्प अनूठा और अद्वितीय है। उनकी रचनाओं में विशेषण का प्रयोग चमत्कारिक ढ़ंग से अनूठा है। उनका प्रयोग भाषा को गंभीर, अर्थवान, बिम्बात्मक, अर्थ व्यंजक, प्रभावोत्पादक, अर्थ प्रवण आदि कई गुणों से सज्जित करता है। उन्होंने नवीन और परंपरागत सभी प्रकार के विशेषणों का स्वाभाविक प्रयोग कर भाषा की अभिव्यंजना शक्ति में चार चाँद लगा दिये है। नयी कविता में भारती इस तरह के अकेल कवि है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. आस्था के चरणः डॉ.नगेन्द्र– नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली 1968, पृ.139
2. नयी कविता : रचना प्रक्रिया–डॉ.ओम प्रकाश अवस्थी– पुस्तक संस्थान कानपुर, 1972 पृ.247
3. कवि दृष्टि : अज्ञेय – लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद पृ.82–83
4. आधुनिक हिन्दी कविता का अभिव्यंजना शिल्प– डॉ.हरदयाल, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली–110002 प्र.सं.1997 पृ.सं. 152
5. बुनी हुई रस्सी – भवानी प्रसाद मिश्र, सरला प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1971, पृ.सं.12
6. नई कविता और धर्मवीर भारती–डॉ.द्वारका प्रसाद साँचीहर, पश्चिमांचल प्रकाशन, अहमदाबाद सं. 2000, पृ.सं.110
7. https://www.prabhatkhabar.com/prabhat-literature/1235264 D
   Prabhat Khabar Digital Desk Date Mon, Dec 24, 2018
8. अंधायुग : धर्मवीर भारती– किताब महल इलाहबाद,1974 पृ. 25
9. अंधा युग : एक परिचय (लेख) – प्रो.एस.वी.एस.एस. नारायण राजू
   http://drnarayanaraju.blogspot.com/2019/01/blog-post_3.html 3 जनवरी 2019
10. डॉ.धर्मवीर भारती का रचना संसार : डॉ.रामसुख व्यास, पृ.86
11. धर्मवीर भारती का काव्य–शिल्प– डॉ.अलका रानी वर्मा, निर्मल पब्लिकेशन्स दिल्ली–94 प्र.सं. 1994, पृ.सं.50–51
12. कनुप्रिया : धर्मवीर भारती– भारतीय ज्ञानपीठ नयी दिल्ली, 1998, पृ.41
13. वही पृ.70–71
14. वही पृ.57
15. ठण्डा लोहा : धर्मवीर भारती–साहित्य भवन, प्रा.लि. इलाहबाद,1952 पृ. 37
16. सात गीत वर्ष : धर्मवीर भारती–भारतीय ज्ञानपीठ नयी दिल्ली,1989 पृ. 90
17. अंधायुग : धर्मवीर भारती– किताब महल इलाहबाद,1974पृ.50
18. वही पृ.84
19. सपना अभी भी : धर्मवीर भारती वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली, 1994, पृ.15
20. वैष्णव दर्शन और भारतीय आशावाद के रूमानी कवि–डॉ.धर्मवीर भारती : डॉ.राजेश दीक्षित का लेख–'शब्द–ब्रह्म' भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका, 17 जुलाई 2017
    Vol 5, Issue 9 पृ.59